SKU शोध संचार

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)

Impact Factor SJIF 2025 – 5.306

Vol-4, Issue-1 January-March-2026 E-ISSN: 2584-2900

प्रेमचंद का कथा साहित्य ''यथार्थ और आदर्श"

वंदना शुक्ला

हिंदी विभाग

श्री कृष्ण विश्वविद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोधसार

मुंशी प्रेमचंद के उपन्यास एवं कथा साहित्य में पूर्ण रूपेण चेतना एवं यथार्थ के दर्शन होते हैं, ग्रामीण किसानों की जीवन पद्धति से अत्यंत प्रभावित होकर गोदान, कर्मभूमि, प्रेमाश्रय आदि उपन्यासों एवं पंच परमेश्वर, पूस की रात, मुक्ति मार्ग, कफन जैसी कहानियों में सामाजिक स्थिति एवं ग्रामीण दैनिक स्थिति का वर्णन किया है अन्य किन्हीं रचनाओं में जहां कृषकों का वर्णन खुलकर भले ही ना किया हो किंतु किसी न किसी माध्यम से यथार्थ का चित्रित किया है। उन्होंने अपनी कथाओं में जिस भूमि में आदर्श स्थापित उसका परीक्षण जरूर किया। मुंशी प्रेमचंद का अत्यंत मार्मिक अंतर चेतना को जगाने वाला उपन्यास "गोदान" है जिसमें होरी नामक किसान की बड़ी मार्मिक दयनीय दशा का वर्णन किया गया है। जिसमे होरी नामक पात्र मन में गाय खरीदने की इच्छा को जीवन पर्यंत पूरा नहीं कर पाता।

मुंशी प्रेमचंद के साहित्य के योगदान के लिए उन्हें कथा सम्राट की उपाधि दी गई। उनके द्वारा यथा स्थिति लिखित उपन्यासों एवं कहानियों में सामाजिक एवं कृषकों की यथास्थिति का अति सूक्ष्म चित्रण हुआ है। वे लेखनी के उत्कृष्ट प्रदर्शन को दर्शाते हुये। प्रेमचंद ने 15 उपन्यास, 300 कहानियां, समीक्षाएं, लेख एवं कई नाटकों की उन्होंने रचना की है। वे यथार्थ परिवेश मानवीय भावनाओं और ग्रामीण जीवन का अंतिम मार्मिक सूक्ष्म रूप से चित्रण करने में सफल थे। भारतीय ग्रामीण व्यवस्था, सामाजिक मुद्दे, नारी चित्रण को चित्रित करने में उन्हें दक्षता प्राप्त थी।

बीज शब्द

सामाजिक स्थितियां, किसान, मार्मिक, अंतर चेतना।

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
Impact Factor SJIF 2025 – 5.306
Vol-4, Issue-1 January-March-2026 E-ISSN: 2584-2900

प्रस्तावना

मुंशी प्रेमचंद का संपूर्ण कथा साहित्य का निचोड़ आदर्श आदर्शोन्मुखी एवं याथर्थवादी मुख्य रूप से झलकता है उन्होंने समाज में व्याप्त गरीबी अन्याय शोषण आदि रूढ़ियों को सच्चाई के साथ प्रस्तुत किया है उन्होंने नैतिक, चारित्रिक, वैचारिक, न्याय पूर्ण समाज की आदर्श छवि को दर्शाया है जिससे पाठक उन तमाम समस्याओं से ग्रसित ग्रसित होता ना दिखाई दे। बल्कि समस्याओं में बदलाव के साथ संयम से स्वप्रेरणा का निर्माण कर सके उनका कथा साहित्य में सच्चाई की जमी पर खड़ा है वह यथार्थ की बुनियाद का निर्माण करते वे ऐसा लिखते हैं कि उनका साहित्य सकारात्मक एवं समाधान की ओर उन्मुख होता है इन्हीं से यह व्यक्ति को आत्मज्ञान कर स्वयं परिष्कार की ओर ले जाते हैं। उदाहरण के तौर पर देखा जाए तो गोदान उपन्यास एवं कहानी पूस की रात में दिखाई देता है किंतु वहीं दूसरी ओर कफन जैसी रचनाओं में बिना यथार्थ के भी समस्या के समाधान को भी दिखाया गया है जो उनकी लेखनी के जादूगर के वाक्य को चरितार्थ करते हैं प्रेमचंद सामंतवाद का प्रकोप नमक का दरोगा के माध्यम से भ्रष्टाचार बाल विवाह है दहेज प्रथा स्त्रियों की गिरती स्थिति का चरित्र चित्रण किया है संयुक्त परिवार में समस्याओं का उत्पन्न होना एवं परिवार विघटित जैसी कई समस्याओं को साहित्य में दिखाया गया है वहीं दूसरी ओर गरीब किसान की हर रोज की समस्याओं से गरीबों गरीबों का शोषण आदि का चित्रण किया है।

शोध विस्तार

प्रेमचंद आदर्श सृजन करने वाले साहित्यकारों में केंद्र बिंदु थे। वे तत्कालीन भारतीय किसान जीवन की पद्धति को निर्धारित करते थे उनके साहित्यिक दृष्टिकोण को देखकर तो पाते है कि एक बड़े हिस्से में किसानों की ग्रामीण स्थिति यथार्थ एवं आदर्श जीवन उन्होंने प्रस्तुत किया है वे समाज की गरीबी, अंतर द्वन्द, किसानो की बेबसी, उन पर हो रहे अत्याचारों, पूंजीपतियों का कृषक वर्ग पर, दबाव जैसे बिंदुओं को खुलकर लेखनी के द्वारा उतारा है। भारतीय किसान के प्रति लिखी रचनाएं सर्वोत्तम मानी गई है प्रेमचंद समाज का आधार किसानों को ही मानते थे।

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
Impact Factor SJIF 2025 – 5.306
Vol-4, Issue-1 January-March-2026 E-ISSN: 2584-2900

प्रेमचंद के प्रमुख उपन्यास

1 रंगभूमि (1925)

2 निर्मला (1927)

3 गबन (1931)

4 कर्मभूमि (1932)

5 गोदान (1936)

6 सेवा सदन (1918) 7 बाजरे हुसैन (उर्दू)

8 प्रेमाश्रय (1921)

9 मंगलसूत्र (अधूरा)

प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं के माध्यम से तत्कालीन समाज में राज्य कर्मचारी एवं राजनेताओं अभिकरणीय सूत्रों का विस्तृत वर्णन किया है इस समय किसानों की दुर्दशा को बताया गया है। मुंशी प्रेमचंद का कथा साहित्य में उदय एक विश्वसनीय घटना है वह न सिर्फ युक्त प्रवर्तक थे बल्कि यथार्थवादी साहित्य सृजन रचनाओं के द्वारा समूचा उपन्यास जगत के लिए एक मिसाल कायम कर गए। उनके साहित्य में मनोरंजन तिलस्मी और रोमांस की जीवन से बाहर सामाजिक अर्थव्यवस्था से मानवीय जीवन को जोड़ा है प्रेमचंद के पूर्व के साहित्यकारों ने नायक राजकुमार ऐय्यरों तथा समाज सुधारक को पदस्थ किया किंतु प्रेमचंद ने अपने उपन्यास एवं कहानियों में नायक के रूप में ग्रामीण अंचल में ही नायक महापुरुष राजकुमारों के रूप में गरीब किसानों को ही कथा साहित्य में भविष्य विभूषित किया वे पहले ऐसे कथाकार थे जिन्होंने सही अर्थ में यथार्थ एवं आदर्श को साहित्य जगत में स्थापित किया कहा जा सकता है कि इसके पहले भी फकीर मोहन सेनापति जो उड़िया भाषा के कथाकार थे उन्होंने भी किसान जीवन की कठिनाइयों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया एवं अपनी रचनाओं का मुख्य बिंदु बनाया सन 1843 - 1918 में प्रसिद्ध उपन्यास छः माड़ आठ गुंठ (छः बीघा जमीन 1897) जो पूर्ण रूप से कृषक जीवन पर आधारित यथार्थवादी उपन्यास है इनकी उपन्यास और कहानियों में उड़ीसा की जनजातीय जीवन वहां का परिवेश एवं सामाजिकता को प्रतिबिंबित करता है उड़ीसा के

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
Impact Factor SJIF 2025 – 5.306
Vol-4, Issue-1 January-March-2026 E-ISSN: 2584-2900

समालोचक मायाधर मानसिंह ने कहा है कि फकीर मोहन से पहले किसी अन्य भारतीय लेखक ने गांव के अनपढ़ मूर्ख को मुख्य नायक के रूप में बताया है उन्होंने अपनी रचनाओं में पहला जीवन पात्र नाई खेतीहर मजदूर और अछूतें उन्होंने अपनी कथा साहित्य में महिलाएं को आम आदमी और औरत को महत्व दिया है।

गोदान

उपन्यास गोदान में होरी एक लंबे समय से गाय खरीदने की सोचता रहा और आखिरी तक उसकी इच्छा पूरी नहीं हुई यहां प्रेमचंद ने ऐतिहासिक आकलन को समझाया है। यहां होरी और उसकी पत्नी धनिया के गृहस्थ जीवन की 20-25 साल की कहानी को बताया है - "हर एक गृहस्थ की भांति होरी के मन में भी गऊ की लालसा चिरकाल से संचित चली जाती थी यही उसके जीवन का सबसे बड़ा स्वान सबसे साध थी। बैंक सूद से चैन करने या जमीन खरीदने या महल बनवाने की विशाल आकांक्षाएं उनकी नन्हे से हृदय में कैसे समाती।[1]

यहां प्रेमचंद ने किस की गरीबी की स्थिति का मार्मिक चित्रण किया है गोदान के पात्र होरी नामक चरित्र चित्रण के माध्यम से गाय की लालसा का पूरा ना होना बताया गया है। यहां किसान जमीदारों के संबंध के अलावा आदर्श वैचारिक भावना का चित्रण किया गया है।

प्रेमचंद ने समाज को दृष्टि में रखकर सो उद्देश्य कहानियाँ लिखी है जो हितकारी एवं उपयोगी हैं वह चाहते थे कि उनकी रचनाएं सिर्फ मनोरंजन पूर्ण न होकर समाज परिवर्तन का साधन हो,उन्होंने 1936 में अध्यक्ष भाषण में कहा -" हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा, जिसमें उच्च चिंतन हो स्वाधीनता का भाव हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का प्रकाश हो, जो हम में गति संघर्ष और बेचैनी पैदा करें, सुलाये नहीं, क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।[2]

गोदान में होरी अपनी परेशानियों, चिताओं को समाज के ठोस संदर्भ में व्यक्त करता हुआ भोले से कहता है - " अनाज तो सब का सब खलियान में ही तुल गया। जमीदार ने अपना लिया महाजन ने अपना लिया। मेरे लिए पांच सेर अनाज बच रहा। यह भूसा तो मैं रातों-रात ढोकर छिपा दिया था नहीं तो तिनका भी न बचता। जमीदार तो एक ही है मगर महाजन तीन-

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
Impact Factor SJIF 2025 – 5.306
Vol-4, Issue-1 January-March-2026 E-ISSN: 2584-2900

तीन है, सहुआएन अलग और मगरू अलग और दातादीन अलग। किसी का भी ब्याज पूरा न चुका। जमीदार के भी आधे रुपए बाकी पड़ गए। सहुआइन से फिर रुपए उधार लिए तो काम चला।[3]

कर्मभूमि प्रेमचंद द्वारा लिखित उपन्यास एक ऐसा रत्न है जिसमें राजनीतिक एवं सामाजिक यथार्थ का वर्णन किया गया है इस उपन्यास में मानव जीवन में चल रही कर्म धर्म की चेतना के द्वद्व का संवेदनशीलता का चित्रण किया है

प्रेमचंद के साहित्य में भारतीय ग्रामीण वातावरण एवं ग्रामीण भावनाओं को चित्रित किया गया है यह प्रेमचंद के यथार्थ की पृष्ठभूमि को दर्शाते हुए कालजयी उपन्यास है इसमें सामाजिक जटिलताओं को सजीव रूप में प्रस्तुत किया गया है - " मर्द का काम है संग्राम में डटे रहना, खुशियां मनाना तो बिलासियो का काम है। मैंने फटकार तो हंसने लगा है। आदमी वह है जो जीवन का एक लक्ष्य बना ले और जिंदगी - भर उसके पीछे पड़ा रहे। कभी कर्तव्य से मुँह न मोडे।[4]

प्रेमचंद द्वारा लिखित प्रसिद्ध हिंदी उपन्यास रंगभूमि जो 1925 में प्रकाशित हुआ यह भारतीय ग्रामीण दिनचर्या, सामाजिक व्यवस्था, और स्वतंत्रता संग्राम जैसे मुख्य बिंदुओं पर आधारित है। इस उपन्यास में जाति, भेद, वर्ग - संघर्ष, औद्योगिकरण, जमीदारों द्वारा अत्याचार जैसे विषयों को कठोरता से उठाया है। कहीं ना कहीं यह गांधी जी के दर्शन 'निष्काम कर्म और सत्य के सिद्धांत' को प्रस्तुत करता है - "पसीने की कमाई खाने वालों का दिवाला नहीं निकलता, दिवाला उनका निकलता है जो दूसरों की कमाई खा खा कर मोटे पड़ते है। भाग को सराहो कि शहर में हो, किसी गांव में होते तो मुंह में मक्खियां आती जाती। मैं तो उन सबों को पापी समझता हूं जो ओने- पौने करके इधर का सौदा उधर बेचकर अपना पेट पालते हैं । सच्ची कमाई उन्हीं की है जो छाती फाड़कर धरती से धन निकलते हैं।[5]

मुंशी प्रेमचंद के समय भारतीय समाज में नारी की स्थिति दयनीय थी नारी को हेय व अवहेलना की दृष्टि से देखा जाता था प्रेमचंद ने अपने उपन्यास एवं कहानियों में नारी का स्तर ऊंचा उठाने के लिए बेमेल विवाह, दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों पर कुठाराघात किया। गबन, निर्मला जैसे उपन्यासों के माध्यम से नारी को संघर्षरत दिखाया गया है उन्होंने निर्मला में नारी

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
Impact Factor SJIF 2025 – 5.306
Vol-4, Issue-1 January-March-2026 E-ISSN: 2584-2900

का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है - "आज हिंदुस्तान नारी को क्रांतिकारी बनाने के लिए जिस सशक्त दौर से गुजर रहा है और जिस स्त्री विमर्श की बातें जोर- शोर से हर मंच पर उठाई जाती हैं उसे प्रेमचंद बहुत पहले ही सशक्त साबित कर चुके है। प्रेमचंद के साहित्य की नारी सहज नारी नहीं है वह इस भौतिक जगत से कहीं ऊपर उठकर शक्ति का रूप धारण कर लेती है जिसके समावर्णन को पढ़कर ऐसा लगता है कि मानो समाज में उसने ही संतुलन कायम रखा।[6]

प्रेमचंद के साहित्य में यथार्थवाद का चित्रण किया गया है वे अभी आदर्शवादी दृष्टिकोण के लिए जाने जाते हैं और उनका यथार्थवाद एवं आदर्शवादी दृष्टिकोण का समन्वय हिंदी साहित्य में अमर है जैसा कि मानव जीवन की प्रकृति है कि वह जैसा महसूस करता है उसी यथार्थ को सीखना है प्रेमचंद का बचपन बड़ी करुण दशा में व्यतीत हुआ है वे यथार्थवादी लेखक थी हिंदी उपन्यास परंपरा और प्रेमचंद की आदर्श वादिता की विशेषता बताती है नंद दुलारे वाजपेई कहते हैं " प्रेमचंद के उपन्यासों में सबसे प्रमुख विशेषता है उनकी आदर्शवादिता चरित्र और उनकी प्रवृत्तियों का निर्देश करने में भी आदर्श मुखी है घटनावली का निर्माण और उपसंहार करने में आदर्श का सदैव ध्यान रखते हैं।[7]

प्रेमचंद रचनाओं में यथार्थ और साहित्यिक अंतर संबंधों को उजागर करते थे। शोषण दमन के साथ-साथ वर्गीय उत्पीड़न का चित्रण भी प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में किया है वे मानते थे कि, प्रत्येक समाज का अपना जीवन और कुछ मान्यताएं होती हैं।

प्रेमचंद की रचना में एंगेल्स के हवाले से चंद्रवली यथार्थ और साहित्य के अतः संबंधों को बताते हुए कहते हैं कि - यथार्थ की व्याख्या करते हुए एंगेल्स ने लिखा है कि प्रारूपिक या सामान्य चरित्र की सृष्टि करके साहित्यकार यथार्थ की वास्तविक स्थापना कर सकता है सामान्य चरित्र का अर्थ प्राय: ठीक-ठाक नहीं समझा जाता। सामान्य चरित्र एक निष्क्रिय माध्यम या मंद औसत की ओर संकेत नहीं करता बल्कि किसी युग के जीवन की सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों का बोध कराता है प्रेमचंद की कृतियों में पाए जाने वाले चरित्र सही अर्थ में प्रारूपिक या सामान्य है। यद्यपि उनके चरित्र निर्धन, शोषित तथा दलित हैं तथापि भारतीय जनता के सभी उत्तम गुणो से भी संपन्न है। जब वे हारते हैं या उनका दुख पूर्ण अंत होता है तब भी वे अपने शोषकों तथा दमन कर्ताओं की अपेक्षा ऊंचे और महान दिखते हैं।[8]

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
Impact Factor SJIF 2025 – 5.306
Vol-4, Issue-1 January-March-2026 E-ISSN: 2584-2900

प्रेमचंद की रचना से प्रभावित होकर अमृतलाल नागर तोल्सतोय के भारतीयों पर पढ़ने वाले प्रभाव की चर्चा करती इस आयत को हिंदू जनमानस से संबंधित कर दिया वे कहते हैं - " केवल वैष्णव ही नहीं बौद्ध जैन और सूफी प्रभाव के मानस की मिली जुली आध्यात्मवादी शक्तियों ने तोल्सतोय की प्रेरणा पाई । जनसाधारण के लिए दोस्तों की धार्मिक और विशिष्ट जनों के लिए मनोवैज्ञानिक और समाज चेतना कलाकार के रूप मेंतोल्सतोय ने अपनी गहरी छाप छोड़ी। तोल्सतोय की इसी इसी मनोज ज्योति ने एक शरीर पर जहां वैष्णव संस्कारनिष्ट गांधी की अंर्तआलोक को सवारा वहीं दूसरे सिरे पर गवई गांव के एक औसत हिंदू परिवार के प्रेमचंद को भी गहराई से छुआ।[9]

प्रेमचंद के ऊपर ताल स्टोर का गहरा प्रभाव रहा नगर ने टॉलस्टॉय की साथ गार्गी की निकटता को भी व्यक्त किया है वह कहते हैं कि प्रेमचंद ने प्रारंभ में उर्दू में ही अपना रचना कार्य किया। उर्दू के रास्ते आते, हिंदी तक आते है। हिंदी के प्रति अभिरुचि का प्रभाव उनके उपन्यासो कहानी और विचारक के रूप मेमिलता है। उन्होंने ऐसा साहित्यिक सामाजिक निचोड़ प्रस्तुत किया है कि उनके बाद आने वाली साहित्यकारों के लिए एक मिसाल बन गई। उनकी रचना सोजे वतन के लिए तमाम आरोपों का सामना करना पड़ा किंतु बाद विवाद का सामना करते हुए रचना प्रक्रिया का विकास हुआ। वे कहानी संग्रह 'सोजे वतन' में लिखते हैं - प्रत्येक कौम 'इल्म - ओ-अदब' अपने समय की सच्चाई को दर्शाता सकता है। सोजे वतन की भूमिका से प्रेमचंद के दिशा निर्देश को समझा जा सकता है लोगों की भावनाओ, जज्बातों का प्रभाव उनकी रचनाओं का मूल मंत्र है।

आदर्श एवं यथार्थ के स्वरूप का निर्धारण उसकी प्रक्रिया, ऐतिहासिक विकास गति से आगे आती है, इसलिए इसका विश्लेषणात्मक एवं समकालीन संदर्भ भी होता है और यह सामाजिक एवं स्वराज प्राप्ति को जोड़ती है- हमारा आदर्श सदैव से यह रहा है कि जहां धूरत्ता और पाखंड और सबलो द्वारा निर्बलों पर अत्याचार देखो उसको समाज के सामने रखो चाहे हिंदू हो, पंडित हो, बाबू हो, मुसलमान हो, या कोई भी हो। इसलिए हमारी कहानियों में आपको पदाधिकारी महाजन वकील और पुजारी गरीब का खून चूसते हुए मिलेंगे और गरीब किसान मजदूर, अछूत, और दरिद्र उनके आघात सहकर भी अपने धर्म और मनुष्यता को हाथ से न

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
Impact Factor SJIF 2025 – 5.306
Vol-4, Issue-1 January-March-2026 E-ISSN: 2584-2900

जाने देंगे, क्योंकि हमने उन्ही में सबसे ज्यादा सच्चाई और सेवा भाव पाया है। और यह हमारा दृढ़ विश्वास है कि जब तक यह समुदायिकता और यह अंधविश्वास हममे से दूर ना होगा। जब तक समाज को पाखंड से मुक्त न कर लेंगे, तब तक हमारा उद्धार ना होगा। हमारा स्वराज केवल विदेशी जुए से अपने को मुक्त करना नहीं है बल्कि हम सामाजिक जुए से भी इस पाखंडी जग से भी जो विदेशी शासन से कहीं घातक है।[10]

मुंशी प्रेमचंद की कुछ कहानियां

1 प्रेम - पूर्णिमा

2 प्रेम - पचीसी

3 मानसरोवर

4 पूस की रात

5 बड़े घर की बेटी

6 ईदगाह

7 पंच परमेश्वर

8 दो बैलों की कहानी

9 नमक का दरोगा

10 परीक्षा आदि ।

प्रेमचंद की कहानी समसामयिक घटनाओं का उल्लेख करती हुई मूलत पारिवारिक वातावरण गरीबी सामाजिक अन्याय एवं सामान्य लोगों के जीवन के संघर्ष एवं सच्चाई को दर्शाती हैं।

पूस की रात

यह कहानी गरीब किसान हल्कू एवं उसकी पत्नी मुन्नी की है जिसमें कठिन परिस्थितियों में जीवन यापन व्यतीत करते है। ये सामाजिक असमानताओं से जूझते हुए किसान की स्थिति दर्शाया गया है।

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
Impact Factor SJIF 2025 – 5.306
Vol-4, Issue-1 January-March-2026 E-ISSN: 2584-2900

ईदगाह

प्रेमचंद ने यह कहानी एक अनाथ बालक हमीद को दृष्टिकोण में रखकर लिखी गई है। जिसमें उसकी दादी के पास रोटी सेकने के लिए चमिता नहीं था तब हमें मिले से अपने खिलौने ना लाकर दादी के लिए चमिता लाता है यह कहानी बाल मनोविज्ञान, प्रेमभाव एवं त्याग को दर्शाती है।

पंच परमेश्वर

जुम्मन शेख और अलगू चौधरी जो दोनों परम मित्र हैं जुम्मन की चाची जो नि: संतान है, अपने भतीजे जुम्मन को जायदाद देती है किंतु जुम्मन और उसकी पत्नी उसका सही ढंग से ख्याल नहीं रखती और ना ही देखभाल करती। इस हेतु जुम्मन की चाची ने पंचायत बुलाई और पंचायत का सरपंच जो जुम्मन का मित्र अलगू चौधरी बना और सही फैसला कर न्याय स्थापित करता है। यह कहानी ईश्वर के रूप में पंचों के न्याय को सर्वोपरि मान्यता प्रदान करती है।

दो बैलों की कहानी

यह कहानी दो बैलों पर आधारित है जहां हीरा और मोती अपने मालिक के प्रति वफादार हैं उन्हें झूरी की ससुराल भेज दिया जाता है वहां उनके ऊपर अत्याचार होते हैं वह दोनों बैल जैसे तैसे बड़े प्रयास करने के बाद अपने मालिक के घर वापस आ जाते हैं। यह कहानी न्याय स्वतंत्रता एवं मित्रता के महत्व को दर्शाती है।

यह कहानियां मनोरंजन के साथ-साथ सामाजिक न्याय एवं मानवीय मूल्यों को प्रमाणित करती हैं।

निष्कर्ष

साहित्य के क्षेत्र में मुंशी प्रेमचंद का योगदान अविस्मरणीय है। उन्होंने कथा सृजन को एक नया अतुलनीय गौरव प्रदान किया। उनके द्वारा लिखी कहानी एवं उपन्यास कालजयी है उनकी लिखी कृतियों ने समाज को परिवर्तित दिशा प्रदान की। ज़ब तक समाज मे अनीति, अत्याचार, कुरीति,

(INTERNATIONAL PEER REVIEWED E-RESEARCH JOURNAL)
Impact Factor SJIF 2025 – 5.306
Vol-4, Issue-1 January-March-2026 E-ISSN: 2584-2900

जैसी विद्रूपताएं होंगी, तब तक यह रचनाएं समाज को प्रकाश पुंज की भांति प्रकाशित करती रहेगी। समाज में घटित एवं संलिप्त व्यक्ति से सीख कर साहित्य की सृष्टि करते है। प्रेमचंद सामाजिक संबंध संघर्ष जटिलताओं एवं समस्याओं को समझते थे तभी उनकी पात्र वर्गीय या सामाजिक ग्रस्तताओं मे संलग्न रहते हैं। उनकी पत्र खूब विशेष विशेषताओं से भरे होते हैं। व्यक्तित्व निर्मित करता हु आ उठता- गिरता है प्रेमचंद ने पात्र की मन: स्थिति का आकलन बड़ी खूबी से किया है व पात्रों की स्थिति पर विशेष बल दिया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मुंशी प्रेमचंद गोदान पृष्ठ संख्या 8 सरस्वती प्रेस इलाहाबाद।
2. 'गोदान 'पृष्ठ संख्या 292।
3. मुंशी प्रेमचंद 'गोदान' पृष्ठ संख्या 21 सरस्वती प्रेस इलाहाबाद।
4. विश्वास, डॉ. केशरी नंदन मिश्र, अलंकार प्रकाशन, पृष्ठ क्रमांक 74-75।
5. विश्वास, डॉ. केशरी नंदन मिश्रा, अलंकार प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 207।
6. उपन्यासकार प्रेमचंद लेख प्रेमचंद और उनकी नायिकाएं डॉक्टर सुरेश सिंहा ।
7. बाजपेई नंददुलारे, प्रेमचंद एक साहित्यिक विवेचन पृ. 17, संस्करण 2003, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. प्रधान गोपाल, छायावादयुगीन साहित्यिकवाद- विवाद, पृ.176-176 प्रथम संस्करण 2002, स्वराज प्रकाशन नई दिल्ली।
9. प्रेमचंद, प्रेमचंद के विचार (सं.) पृ. - 463, संस्करण, 2010, प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली।
10. सिंह मुरली पृं. -171